Faculty of Humanities
Master of Arts (M.A.)- Jainology and Prakrit

Subject – JAINOLOGY & PRAKRIT- Core course/01/01

I Semester Paper - I : (PAPER CODE : 41541)

PAPER NAME – **प्राकृत भाषा एवं साहित्य की परम्परा**

एम.ए. प्रथम वर्ष : जैनविद्या एवं प्राकृत साहित्य

प्रथम सेमेस्टर : प्रश्न पत्र – प्रथम : Paper Code 41541

इस सेमेस्टर में 80–80 अंकों के छः प्रश्न–पत्र होंगे एवं प्रत्येक प्रश्न–पत्र में 20–20 अंक आंतरिक मूल्यांकन के लिए निर्धारित हैं। प्रत्येक प्रश्नपत्र 100 अंक का है। प्रत्येक प्रश्न–पत्र 4 क्रेडिट का होगा, जिसमें 4 कक्षाएँ प्रति सप्ताह प्रत्येक प्रश्न पत्र की की जायेंगी।

प्रश्न पत्र – प्रथम	**प्राकृत भाषा एवं साहित्य की परम्परा**	**100 अंक**
इकाई एक	प्राकृत भाषा का सामान्य परिचय, महत्ता एवं उसकी प्राचीनता के संदर्भ	20 अंक
इकाई दो	भारतीय भाषाएँ वैदिक एवं आधुनिक और प्राकृत का अन्तःसम्बन्ध एवं वैशिष्ट्य, प्राकृत भाषा के विभिन्न रूपों के रूपगठन के नियम एवं वैशिष्ट्य	20 अंक
इकाई तीन	प्राकृत भाषा के भेद–प्रभेद, प्राकृत साहित्य की विधिता का परिचयात्मक विश्लेषण, प्राकृत शिलालेखों में प्रयुक्त प्राकृत भाषा–स्वरूप एवं वैशिष्ट्य	20 अंक
इकाई चार	प्राकृत आगम साहित्य का सर्वेक्षण : आगमिक परिचय, वाचनाएँ, आगमिक व्याख्या साहित्य – अर्द्धमागधी एवं शौरसेनी आगमिक व्याख्या ग्रन्थ	20 अंक
इकाई पांच	प्राकृत रचनानुवाद एवं अभ्यास : कारक/विभक्ति रचना (संज्ञा एवं सर्वनाम प्रयोग), कियारूप एवं कृदन्त के प्रयोगा– रचना एवं अभ्यास	20 अंक

सहायक पुस्तकें:–

1 जैन साहित्य का वृहत् इतिहास भाग 1

2.जैन आगम साहित्य : मनन और मीमांसा – आचार्य देवेन्द्र मुनि शास्त्री

3.मूलाचार का समीक्षात्मक अध्ययन – प्रो. फूलचन्द्र जैन प्रेमी

4.इन्ट्रोडक्शन टू अर्धमागधी – डॉ. ए. एम. घाटगे

5.प्राकृत भाषाओं का व्याकरण – डॉ. आर. पिशेल

6.प्राकृत काव्य, सौरभ (1975) – डॉ. प्रेम सुमन जैन

7.प्राकृत भाषा एवं साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास – डॉ. नेमिचन्द शास्त्री

8.जैन धर्म – आचार्य सुशील मुनि

9.जैन धर्म – डॉ. राजेन्द्र मुनि शास्त्री

10. प्राकृत स्वंय शिक्षक – डॉ. प्रेम सुमन जैन

11. प्राकृत रचना सौरभ – डॉ. के. सी. सोगानी

Faculty of Humanities
Master of Arts (M.A.)- Jainology and Prakrit

Subject – JAINOLOGY & PRAKRIT, - Core course/01/02

I Semester Paper - II : (PAPER CODE : 41542)
PAPER NAME - **अर्धमागधी एवं प्राकृत कवि**

एम.ए. प्रथम वर्ष : जैनविद्या एवं प्राकृत साहित्य

प्रथम सेमेस्टर : प्रश्न पत्र – द्वितीय : Paper Code 41542

इस सेमेस्टर में 80–80 अंकों के छः प्रश्न–पत्र होंगे एवं प्रत्येक प्रश्न–पत्र में 20–20 अंक आंतरिक मूल्यांकन के लिए निर्धारित हैं। प्रत्येक प्रश्नपत्र 100 अंक का है। प्रत्येक प्रश्न–पत्र 4 क्रेडिट का होगा, जिसमें 4 कक्षाएँ प्रति सप्ताह प्रत्येक प्रश्न पत्र की की जायेंगी।

प्रश्न पत्र – तृतीय	**अर्धमागधी एवं प्राकृत कवि**	**100 अंक**
इकाई एक	आचारांग सूत्र (प्रथम श्रुत स्कन्ध) प्रथम अध्ययन, सत्थपरिणा का अर्थ एवं समीक्षा	20 अंक
इकाई दो	आचारांग सूत्र द्वितीय अध्ययन लोकविजय का अर्थ एवं समीक्षा	20 अंक
इकाई तीन	णायाधम्मकहा – पांचवां थावच्चापुत्त अध्ययन एवं सातवॉ रोहिणी अध्ययन	20 अंक
इकाई चार	प्राकृत के प्रमुख कवि : महाकवि हाल, विमलसूरि, संघदासगणि, शिवार्य, आचार्य जिनदत्तसूरि, नेमिचन्द्र सिद्धान्त चक्रवर्ती, देवेन्द्रगणि	20 अंक
इकाई पांच	अर्द्धमागधी प्राकृत भाषा का सोदाहरण विवेचन, संज्ञा, सर्वनाम या क्रिया एवं कृदन्त के प्रमुख नियम एवं उदाहरण	20 अंक

सहायक पुस्तकें:–

1. प्राकृत साहित्य का इतिहास – डॉ. जगदीश चन्द्र जैन
2. जैन साहित्य का वृहत् इतिहास भाग 1
3. आयारो – जैन विश्व भारती लाडनूं (राज.)
4. आगम युग का जैन दर्शन – पं. दलसुख मालवणिया
5. जैन आगम साहित्य : मनन और मीमांसा – आचार्य देवेन्द्र मुनि शास्त्री
6. मूलाचार का समीक्षात्मक अध्ययन – प्रो. फूलचन्द्र जैन प्रेमी
7. इन्ट्रोडक्शन टू अर्धमागधी – डॉ. घाटगे
8. प्राकृत भाषाओं का व्याकरण – डॉ. पिशेल
9. प्राकृत काव्य, सौरभ (1975) – डॉ. प्रेम सुमन जैन
10. प्राकृत भाषा एवं साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास – डॉ. नेमिचन्द शास्त्री
11. आचारांग सूत्र : यु. मधुकर मुनि, ब्यावर
12. ज्ञाताधर्म कथा : यु. मधुकर मुनि, ब्यावर

Faculty of Humanities
Master of Arts (M.A.)- Jainology and Prakrit

Subject – JAINOLOGY & PRAKRIT - Core course/01/03

I Semester Paper - III : (PAPER CODE : 41543)

PAPER NAME - **शौरसेनी प्राकृत**

एम.ए. प्रथम वर्ष : जैनविद्या एवं प्राकृत साहित्य

प्रथम सेमेस्टर : प्रश्न पत्र – तृतीय : Paper Code 41543

इस सेमेस्टर में 80–80 अंकों के छः प्रश्न–पत्र होंगे एवं प्रत्येक प्रश्न–पत्र में 20–20 अंक आंतरिक मूल्यांकन के लिए निर्धारित हैं। प्रत्येक प्रश्नपत्र 100 अंक का है। प्रत्येक प्रश्न–पत्र 4 क्रेडिट का होगा, जिसमें 4 कक्षाएँ प्रति सप्ताह प्रत्येक प्रश्न पत्र की की जायेंगी।

प्रश्न पत्र – चतुर्थ	**शौरसेनी प्राकृत**	**100 अंक**
इकाई एक	प्रवचनसार (ज्ञानाधिकार) – आचार्य कुन्दकुन्द गाथा – 1–92, अनुवाद एवं समीक्षा	20 अंक
इकाई दो	द्रव्यसंग्रह (नेमिचन्द्राचार्य) – व्याख्या एवं समीक्षा	20 अंक
इकाई तीन	भगवती आराधना – शिवार्य 1354 से 1433 गाथाएँ	20 अंक
इकाई चार	शौरसेनी आगम साहित्य का सर्वेक्षण	20 अंक
इकाई पांच	शौरसेनी प्राकृत भाषा का सोदाहरण विवेचन (अभिनव प्राकृत व्याकरण अध्ययन 10 पृ.383–99 तक)	20 अंक

सहायक पुस्तकें:–

1. प्रवचनसार सम्पा. ए.एन.उपाध्ये (भूमिका)
2. द्रव्यसंग्रह – नेमिचन्द्र सिद्धान्त चक्रवर्ती
3. भगवती आराधना (भावार्थ) भाग 2, स.प. के.सी.शास्त्री, जैन संस्कृति रक्षक संघ, सोलापुर, 1978
4. अभिनव प्राकृत व्याकरण – डॉ.नेमिचन्द शास्त्री
5. महावीर और उनकी आचार्य परम्परा भाग–2, डॉ.नेमिचन्द शास्त्री
6. शौरसेनी प्राकृत भाषा और व्याकरण – डॉ.प्रेम सुमन जैन, भारतीय विद्या प्रकाशन, दिल्ली–2001
7. शौरसेनी प्राकृत व्याकरण – डॉ.उदय चन्द जैन
8. जैन धर्म–दर्शन : डॉ.रमेश चन्द्र जैन
9. जैन दर्शन और संस्कृति का इतिहास : प्रो.भागचन्द जैन
10. जैन संस्कृति कोश – डॉ.भागचन्द जैन, भाग 1 से 3
11. शौरसेनी प्राकृत भाषा साहित्य का संक्षिप्त इतिहास – प्रो.राजा राम जैन

Faculty of Humanities
Master of Arts (M.A.)- Jainology and Prakrit

Subject – JAINOLOGY & PRAKRIT, Core course/01/04
I Semester Paper - IV : (PAPER CODE : 41544)
PAPER NAME - **प्रकरण एवं पालि**

एम.ए. प्रथम वर्ष : जैनविद्या एवं प्राकृत साहित्य

प्रथम सेमेस्टर : प्रश्न पत्र – चतुर्थ : Paper Code 41544

इस सेमेस्टर में 80–80 अंकों के छः प्रश्न–पत्र होंगे एवं प्रत्येक प्रश्न–पत्र में 20–20 अंक आंतरिक मूल्यांकन के लिए निर्धारित हैं। प्रत्येक प्रश्नपत्र 100 अंक का है। प्रत्येक प्रश्न–पत्र 4 क्रेडिट का होगा, जिसमें 4 कक्षाएँ प्रति सप्ताह प्रत्येक प्रश्न पत्र की की जायेंगी।

प्रश्न पत्र – द्वितीय	**प्रकरण एवं पालि**	**100 अंक**
इकाई एक	मृच्छकटिक – महाकवि शूद्रक अंक 1, 2, 6 एवं 8वां (प्राकृत अंश मात्र गद्य एवं पद्य)	20 अंक
इकाई दो	पठित ग्रन्थ का भाषागत विवेचन एवं चरित्र–चित्रण	20 अंक
इकाई तीन	धम्मपद (प्रथम यमक एवं द्वितीय अप्पमाद वग्ग)	20 अंक
इकाई चार	पालि भाषा एवं साहित्य का परिचय	20 अंक
इकाई पांच	पठित ग्रन्थों का आलोचनात्मक अध्ययन (मृच्छकटिक एवं धम्मपद)	20 अंक

सहायक पुस्तकें:–

1. महाकवि शूद्रक – डॉ. रमाशंकर त्रिपाठी
2. इन्ट्रोडक्शन, स्टडी ऑफ मृच्छकटिकम् – डॉ. जी. वी. देवस्थली
3. शूद्रक का मृच्छकटिक – डॉ. विश्वनाथ शर्मा
4. मृच्छकटिक एक आलोचनात्मक अध्ययन – डॉ. सुषमा
5. धम्मपद – डॉ. सत्य प्रकाश शर्मा, प्रकाशक साहित्य भण्डार, मेरठ
6. पालि साहित्य का इतिहास – भरत सिंह उपाध्याय
7. प्राकृत साहित्य का इतिहास – डॉ. जगदीश चन्द्र जैन
8. प्राकृत साहित्य की रूपरेखा – डॉ. तारा डागा
9. प्राकृत भाषा एवं साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास – डॉ. नेमिचन्द्र शास्त्री

Faculty of Humanities
Master of Arts (M.A.)- Jainology and Prakrit

Subject – JAINOLOGY & PRAKRIT – Core course/01/05

I Semester Paper - V : (PAPER CODE : 41545)

PAPER NAME - **कथा साहित्य, मुक्तक एवं परम्परा**

एम.ए. प्रथम वर्ष : जैनविद्या एवं प्राकृत साहित्य

प्रथम सेमेस्टर : प्रश्न पत्र – प्रचम : Paper Code 41545

इस सेमेस्टर में 80–80 अंकों के छः प्रश्न–पत्र होंगे एवं प्रत्येक प्रश्न–पत्र में 20–20 अंक आंतरिक मूल्यांकन के लिए निर्धारित हैं। प्रत्येक प्रश्नपत्र 100 अंक का है। प्रत्येक प्रश्न–पत्र 4 क्रेडिट का होगा, जिसमें 4 कक्षाएँ प्रति सप्ताह प्रत्येक प्रश्न पत्र की की जायेंगी।

प्रश्न पत्र – प्रथम	**कथा साहित्य, मुक्तक एवं परम्परा**	**100 अंक**
इकाई एक	कुवलयमाला (उद्योतनसूरि) अनुच्छेद 1–12 तक सम्पा. ए.एन.उपाध्ये, प्राकृत विद्या मण्डल, अहमदाबाद	20 अंक
इकाई दो	वज्जालग्गं की 20 गाथाओं का व्याकरणात्मक मूल्यांकन एवं अनुवाद सम्पा. वज्जालग्गं में जीवन मूल्य – डॉ.के.सी.सोगानी, गाथा 1–20	20 अंक
इकाई तीन	पठित ग्रन्थों का भाषागत एवं आलोचनात्मक अध्ययन	20 अंक
इकाई चार	प्राकृत रचना सौरभ (डॉ.के.सी.सोगानी) के पाठ 1 से 41 तक का अभ्यास, आठ वाक्यों का प्राकृत से हिन्दी में अनुवाद पूछना	20 अंक
इकाई पांच	प्राकृत की परम्परा का परिचय (प्राकृत भाषा एवं साहित्य की परम्परा के इतिहास का सामान्य ज्ञान)	20 अंक

सहायक पुस्तकें:–

1. कुवलयमाला भाग–2, सम्पा. डॉ. ए. एन. उपाध्ये

2. कुवलयमालाकथा का सांस्कृतिक अध्ययन – प्रो. डॉ. प्रेम सुमन जैन

3. प्राकृत भाषा एवं साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास – डॉ. नेमिचन्द शास्त्री

4. जैन धर्म – आचार्य सुशील मुनि

5. जैन धर्म – डॉ. राजेन्द्र मुनि शास्त्री

6. प्राकृत स्वंय शिक्षक – डॉ. प्रेम सुमन जैन

7. प्राकृत रचना सौरभ – डॉ. के. सी. सोगानी

Faculty of Humanities
Master of Arts (M.A.)- Jainology and Prakrit

Subject – JAINOLOGY & PRAKRIT – Core course/01/06

I Semester Paper - VI : (PAPER CODE : 41546)

PAPER NAME - **जैन धर्म – दर्शन एवं महात्मा गांधी**

एम.ए. प्रथम वर्ष : जैनविद्या एवं प्राकृत साहित्य

प्रथम सेमेस्टर : प्रश्न पत्र – षष्ठ : Paper Code 41546

इस सेमेस्टर में 80–80 अंकों के छः प्रश्न–पत्र होंगे एवं प्रत्येक प्रश्न–पत्र में 20–20 अंक आंतरिक मूल्यांकन के लिए निर्धारित हैं। प्रत्येक प्रश्नपत्र 100 अंक का है। प्रत्येक प्रश्न–पत्र 4 क्रेडिट का होगा, जिसमें 4 कक्षाएँ प्रति सप्ताह प्रत्येक प्रश्न पत्र की की जायेंगी।

प्रश्न पत्र – पंचम	**जैन धर्म – दर्शन एवं महात्मा गांधी**	**100 अंक**
इकाई एक	**जैन धर्म, दर्शन का परिचय एवं विश्लेषण** अहिंसा, पंच महाव्रत, अनेकान्तवाद, समता एवं उसका स्वरूप	20 अंक
इकाई दो	महात्मा गाँधी का जीवन परिचय	20 अंक
इकाई तीन	गांधीवादी विचार – ईश्वर, सत्य, अहिंसा, पर्यावरण विज्ञान	20 अंक
इकाई चार	महात्मा गांधी पर जैन धर्म का प्रभाव	20 अंक
इकाई पांच	महात्मा गांधी के विचारों का भारतीय समाज पर प्रभाव	20 अंक

सहायक पुस्तकें:–

1. जैन धर्म – डॉ. कैलाश चन्द्र शास्त्री

2. जैन धर्म – डॉ. जगदीश चन्द्र जैन

3. जैन धर्म – आ. सुशील मुनि

4. जैन धर्म, दर्शन – डॉ. रमेश चन्द्र जैन

5. जैन धर्म – डॉ. राजेन्द्र मुनि शास्त्री

6. भारतीय संस्कृति में जैन धर्म का योगदान – डॉ. हीरालाल जैन

7. जैन संस्कृति और पर्यावरण संरक्षण – प्रो. प्रेम सुमन जैन

8. महात्मा गांधी और मानवता का भविष्य – प्रो. रामजी सिंह

9. गांधी दर्शन को विनोबाभावे की देन – डॉ. दशरथ सिंह

10. गांधी दर्शन – प्रो. रामजी सिंह

11. गांधी दर्शन – डॉ. धीरेन्द्र मोहन दत्त

12. गांधी दर्शन की भूमिका एवं भारतीय संस्कृति – डॉ. श्रीपाल शास्त्री

13. सत्य के साथ प्रयोग – एम. के. गांधी

14. Gandhi and Humanities - डॉ. हेराल्ड थोमकीन

15. गांधी, गीता एवं जैन धर्म – प्रो. सागरमल जैन

16. अहिंसा की बोलती मीनारें – राष्ट्रसन्त गणेशमुनि शास्त्री

17. शिक्षा विज्ञान – राष्ट्रसन्त गणेशमुनि शास्त्री